नौ रोती हुई गुड़ियाँ

पोलैंड की एक कहानी ऐनी पेलोव्स्की द्वारा पुनः सुनाई गई

चार्ल्स मिकलोनटॉक द्वारा चित्रित



हिंदी: छाया भदौरिया

नौ रोती हुई गुड़ियाँ

पोलैंड की एक कहानी ऐनी पेलोव्स्की द्वारा पुनः सुनाई गई

चार्ल्स मिकलोनटॉक द्वारा चित्रित

हिंदी: छाया भदौरिया



नौ रोती हुई गुड़ियाँ

पोलैंड की एक कहानी

जब बच्चा अनातोल रोना बंद नहीं करता, तो उसकी परेशान माँ एक बूढ़ी औरत से सलाह लेती है जो अपनी बुद्धिमत्ता के लिए जानी जाती है। वह बूढ़ी औरत की सलाह का ठीक से पालन करती है, और जल्द ही, निश्चित रूप से, छोटा अनातोल शांत हो जाता है- लेकिन फिर शहर के बाकी बच्चे रोने लगते हैं! एक रोती हुई महामारी की यह व्यंग्यपूर्ण और मजेदार कहानी पोलैंड की पसंदीदा है, जिसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध कहानीकार ऐनी पेलोव्स्की ने बड़ी ही तेजी से दोहराया है और पारंपरिक पोलिश लोक कला के तरीके से कागज के कोलाज के साथ चित्रित किया है, जिसे एक पुरस्कार विजेता कलाकार ने आश्चर्यजनक रूप से पुनर्व्याख्यायित किया है।

नौ रोती हुई गुड़ियाँ

पोलैंड की एक कहानी ऐनी पेलोव्स्की द्वारा पुनः सुनाई गई

चार्ल्स मिकलोनटॉक द्वारा चित्रित

सारांश: अपने बच्चे को लगातार रोने से बचाने के प्रयास में, एक माँ अनजाने में अपने गाँव में रोते हुए बच्चों की महामारी फैला देती है।

मेरे पैतृक परदादा-परदादी, फ्रैंक और अन्ना पेलोव्स्की की स्मृति को समर्पित।

एक बार की बात है, यहाँ से बहुत दूर एक जगह पर एक छोटी सी झोपड़ी थी। झोपड़ी में टाटस बार्टोज़, मम्मा बार्टोज़ और उनका छोटा बेटा एंटोलेक रहते थे।

बेबी एंटोलेक बिना किसी कारण के बहुत रोता था। कभी-कभी वह भोर से ही उठ जाता और पूरे दिन बस रोता ही रहता, यहाँ तक कि खाने या सोने के लिए भी नहीं रुकता। उसकी माँ को डर था कि वह रो-रोकर टूट जाएगा। वह परेशान थी और सोच रही थी कि क्या करे?







एक दिन जब एंटोलेक अपने पूरे जोर से चिल्ला रहा था, एक बूढ़ी बाबका या दादी खेतों से होते हुए बार्टोज़ के घर तक आई। वह आधे फटे-पुराने कपड़े पहने हुए थी, लेकिन फिर भी, जब उसने दरवाज़ा खटखटाया, तो मामा बार्टोज़ ने उसे अंदर आने दिया और उसे मेज़ के पास बैठने को कहा। फिर उसने दूध का एक कटोरा और रोटी किनारे पर रख दिया, क्योंकि वह भूखी थी।

अब इस पूरे समय एंटोलेक चिल्ला रहा था और रो रहा था, इसलिए उसकी माँ ने बूढ़ी औरत से पूछा।

"बाबका प्रिय, क्या तुम कुछ ऐसा जानती हो जो मेरे एंटोलेक को रोने से रोक सके?"

बूढ़ी दादी ने अपने बर्तन से आखिरी निवाला निकाला और फिर बोली, मैंने दूर-दूर तक यात्रा की है और बहुत-सी चीजें देखी हैं, इसलिए आप निश्चिंत रहें।



मेरे पास लगभग हर चीज़ का जवाब है। अब, अगर रोना बंद नहीं होता है, तो आपको कुछ पुराने ब्लाउज या शर्ट की आस्तीन काटनी होगी और उनसे नौ चीथड़े वाली गुड़िया बनानी होगीं। ध्यान रहे कि गुड़ियाँ नौ ही हों। फिर बाजार जाना और जब कोई न देख रहा हो, तो उन्हें एक-एक करके, जाती हुई गाड़ियों और बग्घियों में डाल देना। इससे रोना बंद हो जाएगा।

जैसे ही बूढ़ी बाबका चली गई, मामा बार्टोज़ जल्दी से अटारी में गईं, जहाँ उन्हें कुछ पुराने ब्लाउज़ और शर्ट मिलीं। आस्तीन से उन्होंने नौ चीथड़े वाली गुड़िया के लिए टुकड़े काटे।

फिर सारा दिन वह सिलाई और कटाई करती रहीं जब तक कि पूरी नौ गुड़ियाँ नहीं बन गईं।



पहली गुड़िया लकड़ी
की तरह पतली थी।

दूसरी गुड़िया के माथे की
त्यौरियाँ चढ़ी हुई थीं।

तीसरी गुड़िया की
एक आँख बंद थी।

चौथी गुड़िया की
नाक मुड़ी हुई थी।



पाँचवीं गुड़िया के गाल
पर एक पैच था।

छठी गुड़िया का
मुँह उल्टा था।

सातवीं गुड़िया की ठोड़ी
सुई की तरह तीखी थी।

आठवीं गुड़िया की गर्दन झुर्रीदार
थी और नौवीं गुड़िया के सिर में
छेद था! और सभी गुड़ियाँ ऐसी
लग रही थीं मानो वे रो रही हों।



अगले दिन जब मामा बार्टोज़ अपने पति के साथ बाजार गईं, तो वे गुड़ियों को एक टोकरी में रखकर, उसे रुमाल से ढककर ले गईं। जैसे ही वे बाज़ार के बीच पहुँची, तो वहाँ बहुत भीड़ थी। सबसे पहले गुज़रने वाली गाड़ी एक बेकर की थी। मामा बार्टोज़ ने उसमें पहली चीथड़े वाली गुड़िया गिराई, जो लकड़ी जितनी पतली थी। तभी बढ़ई आया और मामा बार्टोज़ ने दूसरी चिथड़े वाली गुड़िया को उसके थैले में डाल दिया, जिसके माथे पर शिकन थी। तीसरा जो आया वह मोची था और मामा बार्टोज़ ने तीसरी चिथड़े वाली गुड़िया को, जिसकी एक आँख बंद थी, उसके थैले में डाल दिया।







फिर पुलिसवाला, लोहार, कुम्हार और तीन किसान आये और प्रत्येक गाड़ी या थैले या ठेले में मामा बार्टोज़ ने चुपके से एक उदास चेहरे वाली चीथड़े वाली गुड़िया डाल दी। उस शाम, जब बेकर घर आया, तो उसकी बच्ची रोने और चीखने लगी। जब बढ़ई घर आया, तो उसका छोटा लड़का चीखने और चिल्लाने लगा। जब मोची अपना थैला लेकर घर के अंदर गया, तो उसके जुड़वाँ बच्चे चीखने और रोने लगे।

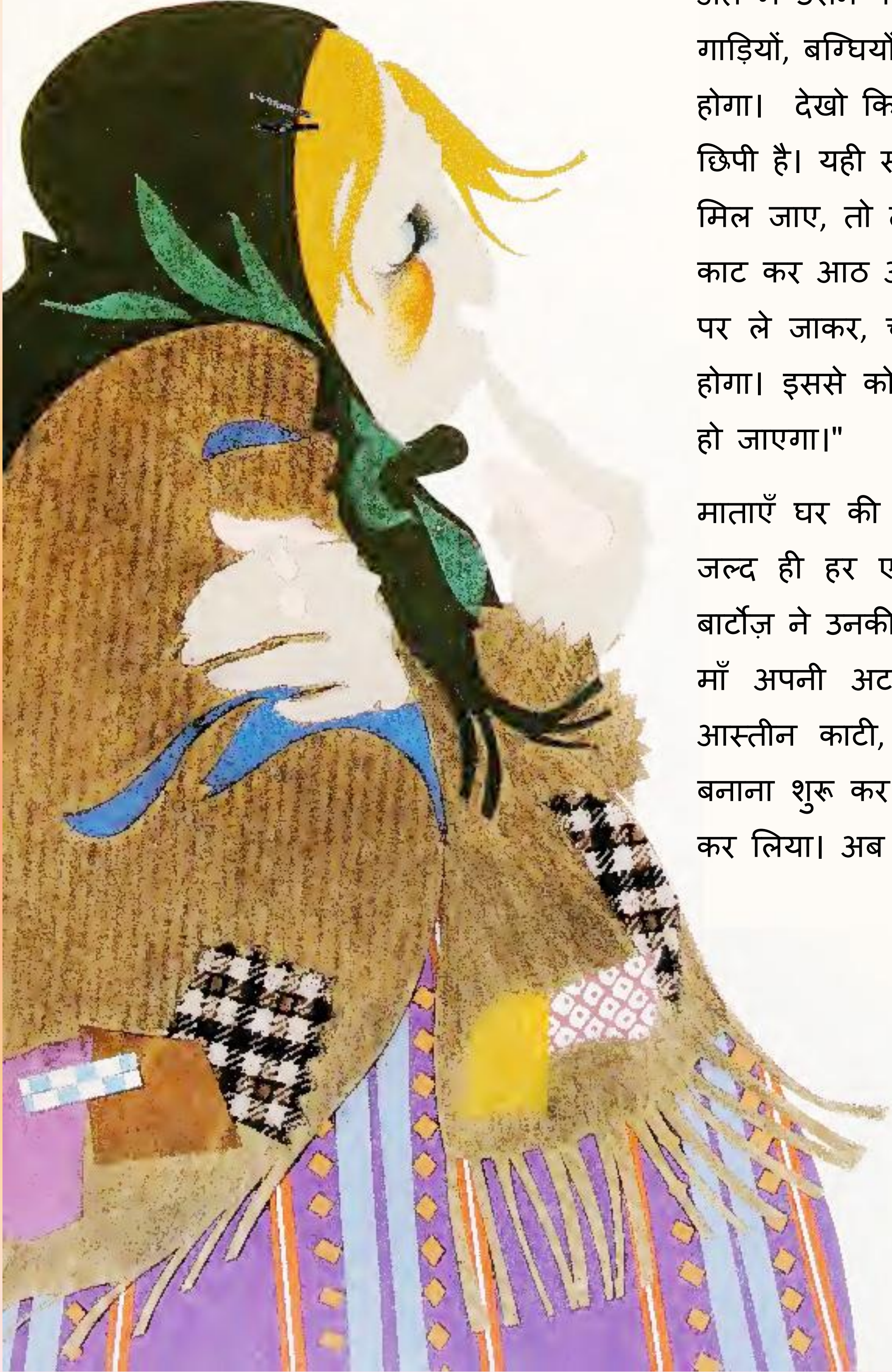
वास्तव में, उस शाम जिन नौ घरों में चीथड़े से बनी गुड़ियाँ लाई गईं, उन सभी के बच्चे एक ही समय पर रोने लगे, मानो किसी बैण्डमास्टर ने अपना डंडा उठाकर बच्चों को संगीत शुरू करने का आदेश दिया हो।





माताओं ने अपने बच्चों को चुप कराने की कोशिश की, लेकिन छोटे बच्चे और भी ज़ोर से रोते रहे। वे पूरी रात और पूरा दिन रोते रहे। वे शायद अभी भी रो रहे होते अगर छोटी बूढ़ी बाबका उस समय नहीं आती जब नौ माताएँ बेकर के घर पर चर्चा कर रही थीं कि वे अपने बच्चों को चुप कराने के लिए क्या कर सकती हैं।

जब उन्होंने बाबका को देखा, तो उन्होंने उसे अंदर आने के लिए आमंत्रित किया और उसे कुछ खाने को देने के बाद, उन्होंने उसकी मदद माँगी। बूढ़ी दादी ने पहले अपने बाएँ कान से, फिर अपने दाहिने कान से सुना। वह बहुत अच्छी तरह से सुन नहीं सकती थी।



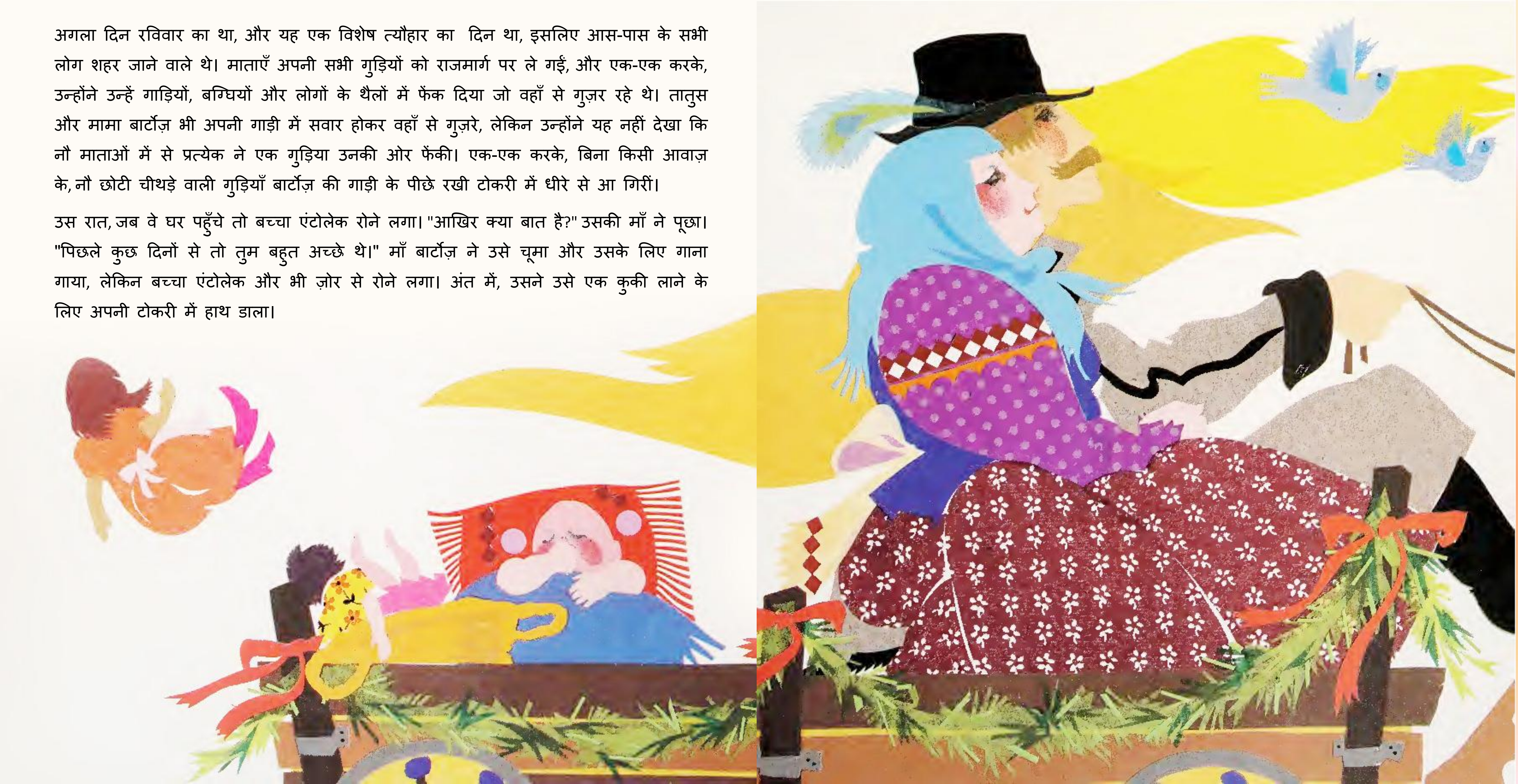
अंत में उसने कहा, "मेरे प्यारे, तुम सभी को अपने घरों, आँगन, गाड़ियों, बग्घियों और थैलों के हर कोने में बहुत ध्यान से देखना होगा। देखो कि कहीं कोई छोटी सी चीथड़े वाली गुड़िया तो नहीं छिपी है। यही सभी के रोने का कारण है। जब तुम्हें ऐसी गुड़िया मिल जाए, तो तुम्हें एक पुरानी कमीज़ या ब्लाउज़ की आस्तीन काट कर आठ और बनानी होगीं। फिर उन सभी नौ को राजमार्ग पर ले जाकर, चुपके से उन्हें किसी राह चलते व्यक्ति को देना होगा। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि कौन है। इससे रोना दूर हो जाएगा।"

माताएँ घर की ओर दौड़ीं। उनमें से हर एक ने खोज की, और जल्द ही हर एक को रोती हुई गुड़िया मिल गई जिसे मामा बार्टोज़ ने उनकी गाड़ी, बग्घी या थैले में फेंक दिया था। फिर हर माँ अपनी अटारी में गई, एक पुरानी शर्ट या ब्लाउज की आस्तीन काटी, और आठ और रोती हुई चीथड़े वाली गुड़ियाँ बनाना शुरू कर दिया। कुछ ही समय में उन सभी ने काम पूरा कर लिया। अब नौ गुना नौ-इक्यासी चीथड़े वाली गुड़ियाँ थीं!



अगला दिन रविवार का था, और यह एक विशेष त्यौहार का दिन था, इसलिए आस-पास के सभी लोग शहर जाने वाले थे। माताएँ अपनी सभी गुड़ियों को राजमार्ग पर ले गईं, और एक-एक करके, उन्होंने उन्हें गाड़ियों, बग्घियों और लोगों के थैलों में फेंक दिया जो वहाँ से गुज़र रहे थे। तातुस और मामा बार्टोज़ भी अपनी गाड़ी में सवार होकर वहाँ से गुज़रे, लेकिन उन्होंने यह नहीं देखा कि नौ माताओं में से प्रत्येक ने एक गुड़िया उनकी ओर फेंकी। एक-एक करके, बिना किसी आवाज़ के, नौ छोटी चीथड़े वाली गुड़ियाँ बार्टोज़ की गाड़ी के पीछे रखी टोकरी में धीरे से आ गिरीं।

उस रात, जब वे घर पहुँचे तो बच्चा एंटोलेक रोने लगा। "आखिर क्या बात है?" उसकी माँ ने पूछा। "पिछले कुछ दिनों से तो तुम बहुत अच्छे थे।" माँ बार्टोज़ ने उसे चूमा और उसके लिए गाना गाया, लेकिन बच्चा एंटोलेक और भी ज़ोर से रोने लगा। अंत में, उसने उसे एक कुकी लाने के लिए अपनी टोकरी में हाथ डाला।





लेकिन हे भगवान! टोकरी में पड़ी थीं

नौ रोती हुई चीथड़े वाली गुड़ियाँ!

पतली वाली;

जिसके माथे पर त्यौरियाँ चढ़ी हैं;

जिसकी एक आँख बंद कर दी गई हो;

जिसकी नाक टेढ़ी है;

जिसके गाल पर एक पैच है;

जिसका मुँह उल्टा हो गया है

जिसकी ठोड़ी सुई की तरह तीखी है;

एक जिसकी गर्दन पर झुर्रियाँ हैं, और दूसरी जिसके सिर में छेद है!

"हे भगवान!," मामा बार्टोज़ रोने लगी। "मैं अपनी रोती हुई गुड़ियाँ वापस ले आई हूँ। मैं अपनी परेशानियाँ दूसरों को देना चाहती थी और अब वे मेरे पास वापस आ गई हैं।"

ठीक उसी समय, बूढ़ी दादी फिर से वहाँ आ गईं।

"अच्छा," बूढ़ी औरत ने पूछा, "अब क्या हाल-चाल हैं?"

"मेरी प्रिय बाबका, मैंने वैसा ही किया जैसा आपने मुझसे कहा था, लेकिन मैं देख रही हूँ कि मैंने अपनी परेशानियों को दूसरों को दुख पहुँचाने के लिए आगे बढ़ा दिया, लेकिन मेरा इरादा ऐसा बिल्कुल भी नहीं था।"

"चिंता मत करो," बूढ़ी बाबका ने कहा। "नौ रोती हुई गुड़ियों को नदी में ले जाओ। उन्हें नदी में फेंक दो और उन्हें यहाँ से और सभी से बहुत दूर बहने दो।"

इसलिए मामा बार्टोज़ ने रोती हुई नौ गुड़ियों को तेज धारा में फेंक दिया और वे तुरंत नज़रों से ओझल हो गईं।



जब वह घर वापस आई तो एन्टोलेक खुशी से उछल रहा था और जहाँ तक मुझे पता है, वह अभी भी खुशी से हँस रहा है।

जहाँ तक बूढ़ी दादी का सवाल है, मुझे लगता है कि वह अभी भी व्यस्त हैं, और उन सभी रोती हुई गुड़ियों से छुटकारा पाने में मदद कर रही है!



ऐनी पेलोव्स्की को पूरी दुनिया में कहानीकार और बच्चों के लिए प्रामाणिक लोक साहित्य और अन्य सामग्रियों की पारखी के रूप में जाना जाता है। उनके दादा-दादी पोलैंड से इस देश में आए थे। विस्कॉन्सिन के पाइन क्रीक में जन्मी सुश्री पेलोव्स्की, अपनी रंगीन पोलिश परंपराओं में डूबी हुई थीं क्योंकि वे अपने परिवार के खेत में पली-बढ़ी थीं।

अंतरराष्ट्रीय साहित्य के साथ-साथ बच्चों के लिए गैर-प्रिंट मीडिया की एक मान्यता प्राप्त अधिकारी, सुश्री पेलोव्स्की ने यूनिसेफ की यूनाइटेड स्टेट्स कमेटी के बच्चों की संस्कृतियों पर सूचना केंद्र की स्थापना की और उसकी निदेशक हैं। विनोना, मिनेसोटा में सेंट टेरेसा कॉलेज और कोलंबिया विश्वविद्यालय से स्नातक, उन्होंने शिक्षण और अनुसंधान के क्षेत्र में दुनिया भर में व्यापक रूप से यात्रा की है। कुछ समय के लिए वह न्यूयॉर्क पब्लिक लाइब्रेरी में कहानीकार और समूह कार्य विशेषज्ञ थीं और उन्होंने पश्चिमी जर्मनी के म्यूनिख में अंतर्राष्ट्रीय युवा पुस्तकालय में भी एक वर्ष बिताया है। ऐनी पेलोव्स्की *द वर्ल्ड ऑफ़ स्टोरीटेलिंग* और अन्य पुस्तकों के साथ-साथ कई पत्रिका लेखों की लेखिका हैं। उन्हें दुनिया भर में बच्चों के बौद्धिक जीवन को समृद्ध करने में उनके योगदान के लिए कई पुरस्कार मिले हैं। जिनमें ग्रोलियर फाउंडेशन अवार्ड और महिला राष्ट्रीय पुस्तक संघ का कॉन्स्टेंस लिंडसे स्किनर अवार्ड शामिल हैं। सुश्री पेल-लोव्स्की अब न्यूयॉर्क शहर में रहती हैं।

पेंसिल्वेनिया में जन्मे **चार्ल्स मिकलोनटॉक**, जिनके माता-पिता पोलिश और यूक्रेनी पृष्ठभूमि के थे, ने इस पुस्तक के चित्रण के लिए अपने परिवार की विरासत के साथ-साथ व्यापक शोध का सहारा लिया, जो सभी पारंपरिक विसी-नानकी या पोलिश पेपरकटिंग तकनीक में किए गए हैं। श्री मिकोलेकाक की पहली पुस्तक, *ग्रेट वुल्फ एंड गुड वुड्समैन,* को अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ ग्राफिक आर्ट्स ने अपनी प्रतिष्ठित फिफ्टी बुक्स ऑफ द ईयर प्रदर्शनी के लिए चुना था, और उन्होंने अपने विशिष्ट पुस्तक चित्रण के लिए उस समय से कई पुरस्कार और जीते हैं। पोलैंड और यूरोप के अन्य हिस्सों की लगातार यात्रा करने वाले चार्ल्स मिकलोनटॉक अपनी पत्नी, जो एक प्रकाशन गृह में संपादक हैं, और उनकी दो बिल्लियों के साथ न्यूयॉर्क शहर में रहते हैं।